शेख़ फ़रीद – सबद १२३

हउ ढूढेदी सजणा सजणु मैडे नालि ॥

सलोक, गुरु रामदास, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८४

हउ ढूढेदी सजणा सजणु मैडे नालि ॥
नानक अलखु न लखीऐ गुरमुखि देइ दिखालि ॥१२१॥

सार: सार्वभौमिक सत्य समस्त अस्तित्व का आधार है और स्वाभाविक रूप से उससे जुड़ा हुआ है। हमारे प्रिय सार के रूप में, वह सदैव उपस्थित रहता है और हमारे अस्तित्व की प्रकृति में गहराई से अंतर्निहित है। हालाँकि, अज्ञान के कारण अलगाव का भाव उत्पन्न हो सकता है जिससे किसी ऐसी वस्तु के लिए गहरी तड़प पैदा हो सकती है जो खोई हुई प्रतीत हो, जबकि वास्तव में वह केवल हमारी नज़रों से ओझल होती है। यह तड़प छिपी हुई निकटता को उजागर करती है। अकसर, जिस चीज़ की खोज स्वयं करता है, वह पहले से ही उसकी पहुँच में होती है, उसके अपने ही बोध की शांत गहराइयों में विद्यमान। इस सत्य को अपनाएँ ताकि उस गहन जुड़ाव को पहचाना जा सके जो सदा वहाँ मौजूद रहा है।

हउ ढूढेदी सजणा सजणु मैडे नालि ॥
मैं प्रिय की तलाश कर रहा था लेकिन वह प्रिय तो मेरे भीतर ही बसा है। इससे यह पता चलता है कि चेतना हमेशा मौजूद रहती है, अज्ञान की अवस्था में, यह हमें दूर प्रतीत हो सकती है जिससे हम इसकी प्राप्ति के लिए तरसते हैं।

नानक अलखु न लखीऐ गुरमुखि देइ दिखालि ॥१२१॥
नानक कहते हैं कि हमारी इंद्रियाँ उसको नहीं पहचान सकतीं, उसे केवल वही अंतरात्मा पहचान पाती है जो ज्ञान और विवेक से जुड़ी हो। (१२१)

तत्त्व: गुरु रामदास, शेख़ फ़रीद के इस विचार का समर्थन करते हैं कि सर्वव्यापक, अदृश्य स्रोत कोई बाहरी लक्ष्य नहीं बल्कि ऐसी उपस्थिति है जिसे भीतर की स्पष्टता से पहचाना जाता है। यह बताते हैं कि इसे प्राप्त नहीं किया जाता बल्कि अनुभव किया जाता है, जब हमारी चेतना ज्ञान के साथ एकरूप हो जाती है। इसी एकत्व में, विभाजन का भ्रम विलीन हो जाता है और हम स्वयं तथा जगत के साथ गहन संबंध अनुभव करते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com